भक्ति

कवि परिचय

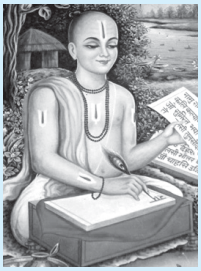

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म संवत् 1589 में बाँदा जिले के राजापुर नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। गोस्वामीजी के गुरु का नाम नरहरि दास था। तुलसीदास का निधन सं. 1680 बताया जाता है। निधन के सम्बन्ध में यह दोहा भी प्रचलित है:-

संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यौ शरीर॥

तुलसीदास जी की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-

रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, बरवै रामायण, जानकी मंगल, रामाज्ञा, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछु, कृष्ण गीतावली ।

कवि ने लोकजीवन को सुख शान्तिपूर्ण बनाने के लिए लोक मर्यादा की आवश्यकता का अनुभव किया। तुलसी ने राम के लोकमंगल व लोककल्याणकारी रूप को जनता के सामने प्रतिष्ठित किया है। राम राज्य की परिकल्पना उनके काव्य का प्रमुख आधार रही है । आदर्श राज्य की स्थापना आज के समय में भी प्रासंगिक है। इसलिए तुलसी जन-जन के मन में बसे हैं। तुलसीदास ने रामचरित मानस के द्वारा जनता को नवजीवन प्रदान किया। उन्होने राम और शिव को मिलाकर वैष्णवों और शैवों को एक किया। रामचरित मानस तथा अन्य ग्रन्थों में गोस्वामी जी ने भावानुकूल प्रसंगो को पहचानकर उनका विस्तृत वर्णन किया है। एक आदर्श भक्त के नाते उन्होंने

मध्यकालीन काव्य के पूर्व मध्यकाल का मुख्य स्वर भक्ति केन्द्रित है। इस काल मे भक्ति की दो मुख्य धाराओं निर्गुण शाखा और सगुण शाखा का विकास हुआ। सगुण भक्ति शाखा में कुछ कवि राम भक्त थे तो कुछ कृष्ण भक्त। निर्गुण भक्ति के कुछ कवि ज्ञान मार्गी थे तो कुछ प्रेममार्गी। ईश्वर के निराकार और साकार रूपों को आधार मानकर भक्ति साहित्य रचा गया। साकार भक्ति के अंतर्गत राम और कृष्ण की प्रमुखता है। इस धारा में भक्त अपने आराध्य के प्रति विभिन्न भाव, उद्‌गार पारंपरिक भक्ति-पद्धति के अनुसार ही अभिव्यक्त करते हैं। भक्त ने इस पद्धति में कहीं आराध्य को अपना सर्वोत्तम प्रिय मानकर उसके प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण प्रदर्शित किया है तो कहीं जीव-जगत सम्बंधी दार्शनिक विचारों का भी विवेचन किया है। भगवद्-भक्ति में ही जीवन की सार्थकता मानकर विषय- वासनाओं में लीन संसार की निस्सारता को व्यक्त किया है। भक्ति-काल के तुलसी ने राम की भक्ति का तथा मीरा ने कृष्ण की भक्ति का आश्रय ग्रहण किया है। जहाँ तुलसी की भक्ति दास्य भाव की थी, वहीं मीरा की भक्ति दाम्पत्य भाव प्रधान थी।

तुलसीदास और मीराबाई दोनों भक्तिकाल के प्रमुख रचनाकार हैं। इनके काव्य में इस युग की अधिकांश विशेषताएँ उपलब्ध हो जाती हैं। तुलसीदास ने मानवजीवन की सार्थकता को राम-भक्ति में ही अनुभव किया है। उन्होंने संसार में अनुरक्त जीवन की, निरर्थकता को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया है कि यह संसार भ्रमात्मक है। मनुष्य इसी भ्रम में फँसकर अपनी शक्तियों को नष्ट करता रहता है और अन्त में जीवन का कोई विशिष्ट फल प्राप्त नहीं कर पाता है । इसलिए भगवान के चरणों में अपने मन को पूर्ण रूप से समर्पित करके ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। विनय पत्रिका से संकलित प्रस्तुत पदों में तुलसीदास ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से इसी सत्य को प्रकट किया है।

मीरा के काव्य में यद्‌यपि कृष्ण-प्रेम को ही प्रमुखता है किन्तु उन्होंने भी संसार की निस्सारता और उसकी क्षणभंगुरता की चर्चा करते हुए भगवान की भक्ति को शाश्वत माना है। वे मानती हैं कि भगवान के चरणों में अपना समर्पण करने वाला ही संसार-सागर से पार उतर सकता है, किन्तु भगवान को पाना सरल नहीं है। मीरा के काव्य में प्रेम की पीड़ा का व्यापक चित्रण है। वे मानती हैं कि प्रेम करने वाले को सब कुछ त्यागकर आराध्य के प्रति एकांतिक समर्पण करना पड़ता है। प्रेम करने की गहन पीड़ा का अनुभव मीरा के काव्य में है।

इस तरह भक्ति के मार्ग में समर्पण की भावना का विस्तार इन कविताओं में है। समर्पण से ही प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम की पीड़ा का अनुभव ही हमें ईश्वर के पास पहुँचाता है।

अपने इष्टदेव राम में शील शक्ति और सौन्दर्य के दर्शन किए हैं। तुलसीदास जी का भाव लोक अत्यधिक सम्पन्न है। थोड़े से शब्दों में बहुत से भावों की अभिव्यक्ति कर देना उनके काव्य का वैशिष्ट्य है। उनकी रचनाओं में सभी रसों को स्थान मिला है।

रामचरित मानस में शृंगार, हास्य, करुण, वीर, वीभत्स, शान्त, रौद्र, भयानक और अद्‌भुत रसों के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं।

भाव पक्ष के समान ही तुलसी का कला पक्ष भी पर्याप्त समृद्ध हैं। तुलसी ने अपने समय की सभी काव्य शैलियों में रचनाएँ की। जायसी की दोहा-चौपाई में उन्होंने रामचरित मानस रचा, सूर की पद शैली में उन्होंने विनय पत्रिका और गीतावली रची, भक्ति सवैया की शैली में उनकी कवितावली लिखी गई। दोहा का प्रयोग उन्होंने दोहावली में किया है। तुलसी का अलंकार विधान भी परम मनोहर बन पड़ा है। उनकी उपमाएँ भी बड़ी सुन्दर होती हैं। उनका उपमा अलंकार कहीं रूपक,कहीं उत्प्रेक्षा और कहीं दृष्टान्त बनकर बैठा है। तुलसीदास मुख्यतः अवधी भाषा के कवि हैं। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। अवधी के साथ तुलसी ने ब्रजभाषा का भी प्रयोग किया है। रामचरित मानस अवधी में तथा कवितावली, गीतावली और विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखी गई हैं। उनकी भाषा का गुण साहित्यिकता है। उसमें सरलता, बोध गम्यता, सौन्दर्य, चमत्कार, प्रसाद, माधुर्य, ओज आदि सभी गुणों का समावेश है।

गोस्वामी तुलसीदास लोक कवि हैं। उनके काव्य से जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। तुलसीदास को गौतम बुद्ध के बाद सबसे बड़ा लोक नायक माना जाता है। अयोध्या सिंह हरिऔध ने सच ही कहा है-

''कविता करके तुलसी न लसै, कविता लसी पा तुलसी की कला।''

विनय के पद

(1)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।
काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥1 ॥
कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि-हठि अधम उधारे ।
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे ॥2 ॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब, माया-बिबस विचारे ।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥3 ॥

(2)

ऐसी मूढ़ता या मन की ।
परिहरि राम-भक्ति-सुरसरिता आस करत ओसकन की ॥1 ॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की ।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होत लोचन की ॥2 ॥
ज्यों गज-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की ।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की ॥3 ॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौ गति जन की ।
तुलसीदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ॥4 ॥

(3)

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहौं ॥1 ॥
पायो नाम चारुचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसोटी, चित कंचनहिं कसैहौं ॥2 ॥
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं ।
मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौ ॥3 ॥

कवि परिचय

मीराबाई

हिन्दी के कृष्ण भक्त रचनाकारों में मीराबाई का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते हुए भी उनकी कविता में भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की सुन्दर झलक दिखाई देती है । मीरा के जन्मकाल तथा जीवन वृत्त के विषय में बहुत मतभेद हैं परन्तु माना जाता है कि प्रेम की इस अनन्य पुजारिन का जन्म सन् 1503 ई. के लगभग राजस्थान के जोधपुर राज्य में हुआ। राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ , पर एक वर्ष में ही वे विधवा हो गईं। बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी । वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थी। कभी-कभी लोक-लाज त्यागकर अपने गिरधर गोपाल के आगे नाचा करती थीं। उन्होंने स्वयं लिखा है- ''पग घुँघरू बाँधि मीरा नाची रे''। लौकिक प्रेम में उनकी रुचि और निष्ठा नहीं थी । यह राजवंश की मर्यादा के विरुद्ध था । राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा, उसे अमृत मानकर मीरा पी गई। परिस्थिति वश मीरा राजस्थान छोड़कर द्वारका चली गईं और वहीं उनका सन् 1573 ई. के लगभग निधन हो गया।

मीराबाई ने गीत गोविन्द की टीका,नरसीजी का मायरा,राग गोविन्द तथा राग सोरठा नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

मीराबाई हिन्दी की भक्त कवयित्री थीं। उनकी भक्ति में एकाग्रता है। उनके अनुसार संसार निरर्थक है। अत: इससे अधिक अनुराग नहीं करना चाहिए जबकि हरि अविनासी है। इसी भाव से उन्होंने अपने प्रियतम रूपी इष्ट देव की उपासना की-

मेरे तो गिरधर गोपाल , दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर-मुकुट मेरौ पति सोई ॥

पदावली

(1)

हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी , मेरा दरद न जाणे कोय ।

सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय॥

गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय।

घायल की गति घायल जानै, की जिन लाई होय॥

जौहरी की गति जौहरी जानै, की जिन जौहर होय।

दरद की मारी बन-बन डोलूँ, वैद मिल्या नहिं कोय॥

मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद सँवलिया होय।

(2)

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार।

क्या जानूँ कछु पुन्य प्रकटे, मानुसा अवतार॥

बढ़त पल-पल घटत छिन-छिन, चलत न लागे बार।

बिरछ के ज्यों पात टूटे, लागे नहिं पुनि डार॥

भौ सागर अति जोर कहिये, विषय ओखी धार ।

सुरत का नर बाँधे बेड़ा, बेगि उतरे पार॥

साधु संता ते महंता, चलत करत पुकार।

दास 'मीरा' लाल गिरिधर, जीवना दिन चार॥

(3)

मन रे परसि हरि के चरन ।

सुभग सीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरन।

जे चरन प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरन॥

जिन चरन ध्रुव अटल कीन्हों, राखि अपने सरन।

जिन चरन ब्रह्मांड भेंट्यो, नख सिखौ श्री भरन॥

मीरा ने अपनी भक्ति भावना को पदों में व्यक्त किया है। उनकी सारी रचनाएँ गीत शैली में हैं। सभी पदों में आलम्बन गिरधर गोपाल हैं। ये सभी पद माधुर्य भाव से ओतप्रोत हैं।

मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में है। ''बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल'' जैसे पदों में सूर के पदों जैसी सरसता और प्रवाह है। वियोग श्रृंगार का चित्रण उनके पदों में सहज ही देखा जा सकता है। मीरा के पदों में प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रधानता है। उनके पदों की शैली सीधी-सादी और आकर्षक है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मीरा ने शुद्ध साहित्यिक भाषा का नहीं बल्कि जन भाषा का प्रयोग किया है।

जिन चरन प्रभु परसि लीनें, तरी गौतम घरन।
जिन चरन कालीहि नाश्यो, गोप लीला करन॥
जिन चरन धारयो गोबर्द्धन, गरब मघवा हरन।
दास'मीरा' लाल गिरिधर, अगम तारन तरन॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **सही विकल्प चुनिए** -

(क) तुलसीदास के पद संकलित हैं-

(अ) कवितावली में (ब) गीतावली में

(स) विनयपत्रिका में (द) रामचरितमानस में

(ख) तुलसीदास के पदों में रस प्रधान है-

(अ) शान्त (ब) श्रृंगार

(स) वीर (द) वात्सल्य

(ग) मीराबाई भक्त थीं -

(अ) राम की (ब) कृष्ण की

(स) शिव की (द) विष्णु की

2. तुलसीदास किसके चरण छोड़कर जाना नहीं चाहते ?
3. तुलसीदास प्रण करके कहाँ बसना चाहते हैं?
4. कृष्ण ने किसका घमण्ड चूर करने के लिए गोवर्धन धारण किया था ?
5. किसी रोगी की पीड़ा को सबसे अधिक कौन अनुभव कर सकता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि के अनुसार राम के चरणों से किन-किन का उद्धार हुआ है?
2. 'करहु लाज निजपन' की पंक्ति में 'निजपन' से कवि का क्या आशय है?

3. मीरा ने अपने प्रियतम से मिलने में क्या कठिनाई बताई है?

4. मीरा के हृदय की पीड़ा को कौन-सा वैद्य दूर कर सकेगा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास के अनुसार मानव मन की मूढ़ता क्या है ?

2. तुलसीदास अपना भावी जीवन किस प्रकार बिताने का संकल्प लेते हैं?

3. मीरा ने हरि के चरणों की कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई हैं?

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) ऐसी मूढ़ता या ----------आपने तन की ।

(ख) अब लौं नसानी ---------- कंचनहिं कसैहों ।

(ग) बढ़त पल पल ----------पुनि डार ।

(घ) गगन मंडल पै --------- की जिन लाई होय ।

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

निसा, आस, पषान, चरन, सुचि, पुन्य, गरव, भौसागर।

2. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

(अ) मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहों।

(ब) ज्यों गज काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की ।

(स) बढ़त पल-पल घटत छिन-छिन चलत न लागैं बार।

(द) जौहरी की गति जौहरी जाने की जिन जौहर होय

(इ) स्यामरूप सुचि रूचिर कसौटी,चित कंचनहि कसैहौं।

3. मीरा के पदों में किन-किन बोली अथवा भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है? संकलित अंश से छाँटकर लिखिए ।

4. माधुर्य गुण में कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया जाता है यह गुण प्राय: श्रृंगार,वात्सल्य और शान्त रस में होता है । संकलित अंश से उदाहरण देकर समझाइए।

5. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस है? उसका स्थायी भाव लिखिए -

(अ) अबलौ नसानी, अब न नसैहों ।

(ब) हेरी में तो प्रेम दिवाणी,मेरा दरद न जाने कोय।

6. गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय। पंक्ति में कौन-सी शब्द शक्ति है?

समझिए

रस शब्द की व्युत्पत्ति '**रस्यते इति रसः**, अर्थात जिससे रस की अनुभूति की जाए। कविता आदि को पढ़ने,सुनने तथा नाटक पढ़ने, सुनने और देखने से जो आनन्दानुभूति होती है वह रस कहलाती है।

मनुष्य के अन्तःकरण में असंख्य भाव तरंगित होते रहते हैं। ये उचित अवसर आते ही उभर आते हैं। यदि कोई हँसी की बात कहे या विचित्र वेशभूषा दिखाई दे तो हमें हँसी आ जाती है। अपशब्द सुनते ही हमारी क्रोधाग्नि भड़क उठती है। अद्‌भुत क्रिया-कलाप की स्थिति हमें विस्मय में डाल देती है । कहने का आशय यह है कि समयानुकूल मन में भाव उत्पन्न होते रहते हैं। ये मन के विकार भाव ही रस निष्पत्ति के कारक हैं।

आचार्यों ने प्रत्येक रस के लिये एक-एक स्थायी भाव माना है-

रस	**स्थायी भाव**
श्रृंगार	रति
हास्य	हास
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
अद्‌भुत	विस्मय
शान्त	शम,निर्वेद
वात्सल्य	वत्सल,स्नेह

यहाँ निर्वेद स्थायी भाव को समझिए-

साधना मेरी अधूरी,मैं विरह में जल न पाई।

व्यर्थ बीती आयु सारी,मैं सजन की हो न पाई॥

प्रस्तुत काव्यांश में निर्वेद की व्यंजना है।

जब मानव मन सांसारिक विषय-वासनाओं से ऊबने लगता है तब उसमें विरक्ति भाव जाग्रत होने लगते हैं। मन इष्ट वस्तु के वियोगादि से अपने को धिक्कारने लगता है। फिर मन में दीनता,चिन्ता और पश्चाताप के विचार आने से निर्वेद या वैराग्य भाव जाग्रत हो जाते हैं । यह वैराग्य भाव ही शांत रस के अन्तर्गत आता है ।

संसार की असारता का अनुभव होने पर हृदयमें तत्वज्ञान या वैराग्य-भावना के जाग्रत होने पर शान्त रस निष्पन्न होता है।

7. 'ऐसी मूढ़ता या मन की परिहरि राम भक्ति सुरसरिता ,आस करत ओसकन की।', में प्रयुक्त रस और उसका स्थायी भाव लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. पुस्तकालय से विनय पत्रिका प्राप्त कर अपनी रुचि के अनुसार कुछ पद याद कीजिए तथा संकलन कीजिए।
2. विद्यालय में किसी अवसर पर कवि दरबार का आयोजन कीजिए । इसमें कक्षा के साथियों को कवियों की वेशभूषा में भक्त कवियों की कविता का सस्वर पाठ करने को कहिए ।
3. अन्य भक्तिकालीन कवियों के चित्रों का संकलन कीजिए।
4. 'भक्ति' के पदों में कुछ अन्तर्कथाएँ छिपी हैं। अन्तर्कथाओं का संकलन कीजिए।

तुलसी के पद

बराई = चुन-चुनकर। **काको** = किसका। **अपनपौ**=अपनापन। **केहि**=किसीको। **बिरद**=यश। **हठि-हठि** = हठपूर्वक। **पषान** =पत्थर, अहल्या। **खग**=जटायु पक्षी। **मृग** = हिरण, मारीचि, **व्याध** = बहेलिया। **महर्षि** =ऋषि,वाल्मीकि। **विटप** = वृक्ष। **परिहरि**= छोड़कर। **ओसकन** = ओस की बूँदें। **गच** =भूमि,दीवार। **सेन** =श्येन, बाज। **छति**=क्षति,हानि। **आनन** = मुँह, चोंच। **मूढ़ता** =मूर्खता। **निरखि** = देखकर। **अब लौं** = अब तक। **नसानी** = नष्ट की, बिगाड़ी । **सिरानी** = शान्त हो गई, बीत गई। **डसैहौं** = स्वयं को डसाऊँगा। **खसैहौं** = गिराऊँगा। **पन कै** = प्रण करके, प्रतिज्ञा करके। **बसैहौं** = बसाऊँगा ।

मीरा के पद

विध =विधि। **जौहरी** =जौहर करने वाला। **बार** =देरी। **बिरछ** = वृक्ष। **भौसागर** =भवसागर, संसार रूपी समुद्र। **ओखी** = उसकी। **सुरत**=भगवान का प्रेम,ध्यान, स्मरण। **बेड़ा**=नावों का समूह। **परसि** = स्पर्श, छूना। **कालीहि** = कालिया नाग का। **मघवा** = इन्द्र। **अगम** =कठिन, जहाँ पहुँचा न जा सके ।

टीप – जौहर –राजपूतों में यह परम्परा थी कि विपत्ति आने पर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्त्रियाँ आग में जलकर भस्म हो जाती थीं।

***